सप्तम अध्याय

सन् 1857 ईं0 के प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम
के शहीद व क्रांतिकारी।
सन् 1857 ईo भारत की मुक्ति प्राप्त करने का प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम में अनेक अन्तर्भारतीयों, स्वतंत्रता सेनानियों, आजादी के दीवाने देशभक्तों ने ब्रतानिया सरकार से संघर्ष करते हुए हंसते-हंसते अपने प्राण भारतरत्न की बलिदंडी पर न्यौद्धार कर है। बहुत संख्या में स्वतंत्रता सेनानी गुमन शहीद हो गये और इतिहास में उनका नाम अंकित न हो सका। भारत के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम सन् 1857 ईo ने सोची हुई भारतीय जनता को जगाया और अपने धर्म व स्वतंत्रता की रक्षा के लिये बलिदान देते के लिए प्रेतित किया। सन् 1857 ईo में अनेक क्रांति बीरों ने अपने प्राणों को आदर्श दी, जीवन भर जैल की काल-कोटियों को यातना सही, उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं।

रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, नाना साहेब पेशावा, वाजिद अली शाह, बहादुर शाह जफर, बेगम हजरत महल, बाबू कुवर सिंह, अमर सिंह, अजीमुल्ला खाँ, जीनत महल, बलराम नक्कल अली, अहमद शाह, खान बहादुर खान, सेनापति बबल खाँ, झलकारी बाई, मौलवी अहमदुल्ला, रानी अवनती बाई, मंगल रायडे, राव तुलाराम, राणा रॉनी माधव सिंह, निशान सिंह, जोधर सिंह, पीर अली, अजीजुद्दीन बाई, टिकमा सिंह, मौलवी लियाकत अली।

रानी लक्ष्मी बाई

लक्ष्मी बाई का जन्म 19 नवंबर सन् 1835 ईo को चाराणसी में हुआ। इनके पिता का नाम मोरोपंत व माता का नाम भगीरथी बाई था। व्यार से माता-पिता लक्ष्मी बाई को मनु बाई के नाम से पुकारते थे। जब लक्ष्मी बाई चार वर्ष की हुई तो उनकी माता भगीरथी बाई की मृत्यु हो गयी। मोरोपंत अपनी प्राप्त वर्ष की बेटी को लेकर चाराण्यासी से बिद्रूर पेशावा बाजीराव के पास चले गए।

मनु बाई कहीं बड़ी हुई तो वह नाना के साथ पढ़ने-लिखने लगा। मनुबाई को मनु बाई जब बड़ी हुई तो वह नाना के साथ पढ़ने-लिखने लगा। मनुबाई का चंकला को देखकर उन्हें छबीली कहा करते थे। मनु ने बचपन में हो तीर-तलवार चंकलाओं को देखकर उन्हें छबीली कहा करते थे। मनु ने बचपन में हाथी को चलाना सीख लिया था। मुनुबाई का भी मनु को शौक थी। बचपन में हाथी को चलाना सीख लिया था। पुडुस्वायर का भी मनु को शौक थी। बचपन में हाथी को चलाना सीख लिया था। मनुबाई का भी मनु को शौक थी। मनु रेखकर, हाथी की सवारी का आग्रह अपने पिता से किया। बालकाल से ही मनु सहस्र, चोर तथा तीव्र बुद्धि की थी।
13 वर्ष की उम्र में सुन्दरी का विवाह झाँसी के महाराजा गंगा धर राव के साथ करना हुआ और समुद्रात रुप में सुन्दरी का नाम रखा गया लक्ष्मी बाई। 21 नवम्बर सन 1853 की तारीख पर महाराजा गंगा धर की मृत्यु हो गयी।

अब समय रानी लक्ष्मी बाई की आयु 18 वर्ष की थी। महाराजा गंगा धर की मृत्यु के पश्चात अंग्रेजों ने झाँसी के कोष भण्डार पर सील लगाकर गोरे सैनिकों का पहरा धारा दिया और महाराजा गंगा धर के दत्तक पुत्र आनंद राव को महाराजा का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया। महारानी लक्ष्मी बाई अपनी इच्छा से कोष से एक पाई भी नहीं निकाल सकती थी। जनहित के कार्यों में खर्च के लिए उन्हें अंग्रेजों ने आजा लेनी पड़ती थी।

रानी लक्ष्मी बाई को कम्पनी ने 5 हजार रुपये माह की पेंशन देने का बाध्य किया। लेकिन स्वाभाविक रानी पेंशन लेने से स्वप्न रूप से मना कर दिया। रानी लक्ष्मी बाई के पति में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आक्रोश की ज्वाला भड़क उठी। सन 1856 में समस्त देश में अंग्रेजी शासन के अत्याचारों के विरुद्ध जनता में विरोध की भवन उत्पन्न हो रही थी। देशभक्त क्रांतिकारियों ने छावनियों में भारतीय सैनिकों से समर्पण स्थापित कर पूरे देश में क्रांति के लिए 31 मई, सन 1857 का दिन निर्धारित कर दिया था।

लक्ष्मी बाई भी अंग्रेजों सरकार के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार थी। रानी के जुलूस कर कर ब्राह्मण नाना साहेब व तात्या टोपेले, बहादुर शाह जफर आदि से समर्पण कर रहे थे। अतः पूर्व योजना के अनुसार झाँसी में 4 जून, सन 1857 ई को हवलदार पुरे भाकर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। झाँसी को हुकूमत रानी लक्ष्मी पुरे भाकर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। झाँसी की हुकूमत रानी लक्ष्मी पुरे भाकर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। झाँसी की हुकूमत रानी लक्ष्मी पुरे भाकर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। झाँसी की हुकूमत रानी लक्ष्मी पुरे भाकर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
रूम में सूर्योदय का जो वध हुआ, उसमें उस बेचारी का कोई हाथ न था।

हरामी लक्ष्मी बाी के आक्रक्षण व्यक्ति के बारे में मिसौ गिल्लन नामक अंग्रेज से अपने पुस्तक में लिखा है। “रानी की कुंकुरी पर सुनहरी जरीद पर्सरफूटा बंधा ह्या था। उससे दमक तो बनी नकाशीदार, चौंदी मही फिस्तौल लटकी रहती थी। लंडन के पास जहाँ पर बुझा पेश-कर्नज भी रहता था। साड़ी के बदले जहाँ दोही पाया जाना ह्या था। इस सुन्दर रानी को इस पोशाक में देखकर लोगों को किसी युवक का द्वार होता था।” रानी लक्ष्मी बाई ने झांसी का राजसन अपने हाथों में लेकर सर्वप्रथम झांसी की सुंदर व्यक्ति को सुरट दिया। प्रजा के हित में अनेक कार्य किये। लेकिन उन समय गंडवर के एक रिश्तेदार ने झांसी पर अपना अधिकार दिखाने हुए आक्रमण का तितिया। रानी ने इसे बड़ी बीमारी के साथ पराजित किया। इसके तुरंत बाद और झांसी का दिया तब भी निकटे ने बैस हजार की सेना लेकर झांसी पर आक्रमण किया। रानी की ध्येय कैशल व बवनदर सेनाओं ने उसे भी परास्त कर भगाया।

सत्का 57 में स्वाधीनता संग्राम के यह एक मुख्यतम घटना थी। पूर्व निर्धन के अनुसार 4 जून, सन 1857 को झांसी में क्रांति प्रारंभ हुई। कम्पनी की सेना सन 1854 के ऐलान के बाद ही झांसी पहुंच चुकी थी। और झांसी पर कम्पनी का कब्जा हो गया था। 4 जून को सबसे पहले 12 नवम्बर देशी पलटन के हमले का गुम्बार सिंह ने मैण्जों और खजाजे पर फिर से कब्जा कर लिया। उसके बाद रानी लक्ष्मी बाई ने महल से निकलकर शास्त्र धारण कर स्वयं क्रांतिकारी सेना का सेनानियत उपाधि किया। उस समय लक्ष्मीबाई की आयु केवल 21 साल की थी। 7 जून को रिसालदार कले ने और तहसीलदार मोहम्मद हसन ने रानी की ओर से संदेश पर हमला किया। 8 जून को, कहा जाता है कि संदेश कले ने और तहसीलदार मोहम्मद हसन ने रानी की ओर से संदेश किया। उस समय लक्ष्मीबाई की आयु केवल 21 साल की थी। 7 जून को रिसालदार कले ने और तहसीलदार मोहम्मद हसन ने रानी की ओर से संदेश किया। 8 जून को, कहा जाता है कि संदेश कले ने और तहसीलदार मोहम्मद हसन ने रानी की ओर से संदेश किया।

इतिहासकार सर जान के ने लिखा है कि इस हत्याकाण्ड में रानी लक्ष्मीबाई का कोई सम्राट नहीं था, सुसङ्ग कोई आदमी बीमार पर मौजूद था और न उसके इसकी इजाफा दी थी।

आंग्रेज ने रानी लक्ष्मी बाई के चरित्र पर अनेक दोषारोपण किये। अंग्रेज
हृदयकार सर जान के ने लिखा है—“उस पर बुरे-बुरे दोष लगाए गए क्योंकि हम लोग में यह एक रिवाज है कि पहले किसी देशी मृत्यु का राज ले लेते हैं और फिर सत्यता मृत्यु के उसके उत्तराधिकारी की झूठी बुद्धियां करने लगते हैं। कहा गया है कि अन्य लोगों के लिए बच्चों हैं और दूसरों के प्रभाव में सही है। यह भी कहा गया कि रानी को नशे का व्यस्त है यह बात कि रानी केवल बच्चों नहीं थी, उसकी बच्चों से पूरी तरह सहित था; और उसके जन्म करने की बात विश्वसनीय झूठी कल्पना मनो मध्य होती है।”

मंगेल मैलकम ने 16 मार्च, सन 1855 को गवर्नर जनरल के नाम एक सरकारी पत्र में लिखा—“रानी का चरित्र बहुत ऊंचा है और जॉर्जी में हर आदर उसे बड़े आदर की हुई से देखता है।”

सर दुरेज ने जॉर्जी पर आक्रमण कर दिया। इसमें रानी के अनेक बीर योद्धा जोसी गोसेन्डी और केबल बरहवा आदि शहीद हो गये और इसके बाद रानी ने रानी में अपने अनेक सैनिकों के साथ किया खाली कर दिया। रानी अपनी योजना के अनुसार ग्वालियर की ओर चली तो वहाँ ग्वालियर की सेना ने रानी की सेना के साथ प्रभुकर युद्ध किया। लेकिन रानी की सेना ने ग्वालियर की सेना को हराकर ग्वालियर पर अपना अधिकार कर लिया।

सर दुरेज रानी का पीछा करते हुए ग्वालियर पहुँचा। रानी और अंग्रेजी सेना में प्रभुकर युद्ध हुआ। अंग्रेजों को बराबर मदद मिल रही थी और रानी अकेली पड़ गयी थी। अंग्रेज सैनिकों ने रानी को चारों ओर से घेरा लिया। रानी लक्ष्मी बाई ने जब यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती तो वह बीताते साथ यह देखा कि अब वह अंग्रेजों के बन्धन से नहीं बच सकती ।

18 जून, सन 1858 को दिन जिस बीताते के साथ युद्ध करते हुए रानी लक्ष्मी बाई शहीद हुई वह भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में शाहस्त्र का एक अनुपम उदाहरण है।
तात्विक टोपें

तात्विक टोपें का जन्म सन् 1814 ई. में नासिक के पास जावलिय में हुआ था। कुंव में पिता का नाम पांडुरंग राव और माता का नाम उकमाबाई था। तात्विक टोपे का बचपन का नाम रामचन्द्र पांडुरंग था। इनके पिता पांडुरंग राव बाजीराव पेशवा के दत्र विभाग के अध्यक्ष थे।

बाजीराव पूर्णा को छोड़कर बिठौर गये उनके साथ पांडुरंग अपने परिवार के साथ बिठौर में चले गये। तात्विक टोपे का बचपन बिठौर में ही व्यतीत हुआ और बाजीराव के तक पुनः के साथ पहले-खेलते कूदते थे। उन्होंने बचपन में ही तीर-तल्लिया चलाना और घुड़सवारी सीख ली थी। तात्विक टोपे गुजराती, मराठी, हिंदी और उर्दू भाषा के जाता थे।

सन् 1851 ई. में बाजीराव की मृत्यु होने पर उनका नाना साहेब पेशवा की गदरी पर बैठे तो तात्विक टोपे नाना साहेब के साथ ही रहने लगे। नाना साहेब ने तात्विक टोपे को अपनी सेना का प्रधान सेनापति बनाया। सन् 1857 ई. के स्वतंत्रता-संग्राम में तात्विक टोपे की महात्मगृह भूमिका रही तथा उनके साहस एवं शौर्य से क्रान्तिकारी अंग्रेजों को कमान से बाहर निकालने में सफल रहे।

तात्वि टोपे निरपराध अंग्रेजो श्रोटी-पुरुषों की हत्या का विरोध करते थे। उन्होंने स्वतंत्र जनसेनियों द्वारा हल्लाबाद में नाबों पर सवार अंग्रेज श्रोटी-पुरुषों की हत्या का विरोध किया था। उन्होंने कहा था-“मुझे अल्पता दुःख है, मेरे मन जरूर था भी स्वतंत्र-सैनिकों को निरपराध अंग्रेजों की हत्या कर दी गयी।”

राष्ट्र होम्स को जब यह सूचना मिली कि तात्विक टोपे दक्षिण की ओर रवाना हो गए हैं तो वह एक विशाल सेना लेकर उसका मार्ग रोकने के लिए पहुँचे। होम्स ने तात्विक टोपे का युद्ध देखकर तात्विक टोपे पर आक्रमण कर दिया। उसे देखकर तात्विक टोपे ने उसे चकमा देकर तेंद्र राज्य पर आक्रमण कर दिया। उसे देखकर तात्विक टोपे का युद्ध देखकर उसे भेज गयी थी, उसने तात्वि का स्वागत किया तथा अपने टोपे भी उसे दे दिया।

राष्ट्र होम्स ने अपनी सहायता के लिए राजपूतों को बुलाया। अंग्रेजों की विशाल सेना और तात्विक टोपे की सेना के बीच युद्ध लड़ा हुआ। इसमें तात्विक टोपे अंग्रेजों
कानपुर को और बढ़ा। नितंदेह बैर, पराक्रम, कुरती और अन्य भारतवासियों को अपने हर में करने की शक्ति में तात्या अधिकीय था ।

तात्या टोपे के साहस च चीरता के विषय में अंग्रेज इतिहासकार मालेसन ने लिखा है -

"विजयी सेना का नेता मूर्ख न था। विंधम ने उसे जो हानि पहुंचाई, उससे डर बोने के स्थान पर वह अंग्रेज सेनापति की कमजोरी को अच्छी तरह समझ गया। तात्या टोपे ने उस समय विंधम की स्थिति और उसकी आवश्यकताओं को इतनी अच्छी तरह पहचाना, जिस से उन्हें खुली हुई किताब को पहुंचना है। तात्या में एक सच्चे सेनापति के स्वाभाविक गुण मौजूद थे। उसने विंधम को इन कमजोरियों से फायदा उठाने की इंतजार कर दिया।" अगले दिन तात्या की सेना ने विंधम को सेना को तीन और से घेर लिया। विंधम की सेना को पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा तथा वह दिन के संग्राम में समूह कानपुर पर तात्या टोपे का अधिकार हो गया और इस युद्ध में अंग्रेज सेनाके अधिकारी मारे गये।

जना साहब, बाला साहब, रानी लक्ष्मी बाई तथा तात्या टोपे के अनेक वीर साधियों के न होने पर भी उसके हिम्मत न हारी और उसने फिर से सेना संगठित करने का प्रयास किया। म्यारियर ने निकलकर तात्या ने राह साहब, बौंदा के नवाब और बचे हुए सैनिकों को लेकर नर्मदा की ओर बढ़ने का प्रयास किया। तात्या टोपे का मुख्य उद्देश्य नर्मदा पर वर्षा नाम पर दक्षिण में सर्दियों और बाह्री की जनता को क्रांति के लिए तैयार करना था। 22 जून को अंग्रेजी सेना ने उसे अलीपुर में घेर लिया। लेकिन वह बचकर निकल गया।

कोटा के युद्ध में 14 अगस्त को अंग्रेजी सेना न तात्या की सेना के मध्य भयंकर संग्राम हुआ। लेकिन इसमें तात्या का पीछे हटना पड़ा और तात्या टोपे भी मैदान में रह गयी जो अंग्रेजों के हाथ लगी। उन्हें और से अंग्रेजी सेना टात्या टोपे का पीछा कर रही जो अंग्रेजों के हाथ लगी। चारी और से अंग्रेजी सेना तात्या टोपे का पीछा कर रही जो अंग्रेजों के हाथ लगी। लेकिन तात्या बड़ी तेजी के साथ चमबल तक पहुंचने में सफल रहा और अंग्रेजों थी। लेकिन तात्या बड़ी तेजी के साथ चमबल तक पहुंचे ने सफल रहा और अंग्रेजों थीं। अब वह झालरापट्टन की ओर बढ़ा तो वहाँ का राजा विशाल सेना हो गयी थी। अब वह झालरापट्टन की ओर बढ़ा तो वहाँ का राजा विशाल सेना हो गयी थी।
गौरवता तोपेन ने युद्ध के खर्च के लिए राजा झालरापट्टन से 15 लाख रुपये प्राप्त किया। तात्या ने फिर से सेना का संगठन किया।

तात्या तोपेन के चीन इस समय यह बड़े-बड़े अंग्रेज सैनिक अधिकारी जिसमें से रादर्स, होम्स, पार्क, मिचेल, होप और लाकार्ड यह तरफ से तात्या को धेरे दे प्रभाव कर रहे थे। कई बार तात्या और उसकी सेना अंग्रेजी सेना को सामने लिखाई तब दे जाती थी। किन्तु फिर भी तात्या बचकर निकल जाता था।

उर्मिला के निकट मिचेल की सेना तात्या पर आ दौड़ी। धर्मों-से संग्राम के बाद तात्या तोपेन फिर अपनी तीस तोपेन मैदान में छोड़कर बचकर निकल गया। तात्या में एक स्थान पर उसे चार और तोपें छिड़ी। इसके बाद उन्हें तात्या की तरफ बढ़कर तात्या ने सिफारिश के नगर ईरागुर पर हमला किया और वहां से आठ और तोपें प्राप्त की। तात्या जिस तरह हो, नर्मान पार करने की धुन में था और अंग्रेज सेना उसे चारों ओर से पेशकर रोकना चाहती थी। अंग्रेज लेकर ने तात्या को संगठन शक्ति, रण-कुशलता व गुलाम युद्ध पद्धति का वर्णन निम्न प्रकार से किया है- "इसके बाद तात्या के बचने और भाग जाने का यह आश्चर्यजनक सिलसिला शुरू हुआ, जो दस महीने तक जारी रहा और जिससे धार्मिक होता था कि हमारी विजय निकल हो गई। इस सिलसिले के कारण तात्या का नाम यूरोप भर में हमारे अधिकांश अंग्रेज सेनापतियों के नामों की अपेक्षा कहीं अधिक मशहूर हो गया। तात्या के सामने समस्त सफल न थी। उसे अपनी अवज्ञात सेना को लागतार इसी तेज रफ्तार पर लेना पड़ता था कि जिससे न केवल उसका पीछा करने वाली सेनाएं ही, बल्कि वे सेनाएं भी जो कभी घायल और अपने निजी चार और से अचानक उस पर दूर पड़ती थी, हाथ मलती रह जाती थी। एक और वह इस तरह उन्मतत्त्व अपनी सेना को भगाए लिए जाता था, दूसरी और वह देखने राहें से कब्जा कर लेता था, अपने साथ तोप सामने था, दूसरे में नये तोपें साथ ले लेता था और इन सबके अतिरिक्त बाहर भी कर लेता था, इत्यादि से नये तोपें साथ रंगानट भरती करता जाता था, जिसें अपनी सेना के लिए इस तरह के नये तैयार-सेवक रंगानट भरती करता जाता था। तात्या ने अपने अल्प कि साधने मौल रोजना के हिसाब से लगातार भागना पड़ता था। तात्या ने अपने अल्प कि साधने मौल रोजना के हिसाब से लगातार भागना पड़ता था। तात्या ने अपने अल्प कि साधने मौल रोजना के हिसाब से लगातार भागना पड़ता था।
तला जगपु र से होकर मद्रास पहुँचना चाहता था। यदि वह वास्तव में मद्रास तक पहुँच जाता, तो वह हमारे लिए उतना भयंकर साबित होता, जितना कि हैदराबादी क्षेत्र समय हो चुका था। नर्मदा उसके लिए इतनी ही बड़ी स्थानत होती हुई, जितना इंग्लिश नेरोलिंग के लिए। तात्त्विक तब कुछ कर सका, किन्तु नर्मदा को पार न कर पाया। क्योंकि सेनाय पर धरते ही धौरे-धौरे आए बड़ी, जितने धौरे की उसकी आदत थी। किन्तु फिर मजबूर होकर उन्होंने तेज चलना सीख लिया। जनरल ग्रेगर और कर्नल नेपियर की अनुलता की तोपें कोई-कोई यातायात इतनी ही तेज थी, जितनी ही तात्त्विक की ऊपरता आदित्य यातना। फिर भी, तात्त्विक वचनकर निकलता रहा। गर्मियां निकल गईं, बरसात निकल गईं, सारी सर्दी निकल गईं, और फिर तमाम गर्मी निकल गईं, तब भी तात्त्विक निकलता चला जा रहा था। उसके साथ कभी दो हजार थरके हुए जोतपी होते थे और कभी पढ़क हजार।’’

लडन टाइम्स के संवाददाता ने 17 जनवरी, सन 1859 ई. के अंक में लिखा-

“हमारा अल्मुन्तु अद्भुत मित्र तात्त्विक तरह प्रसंग देने वाला और चालक शाद्रु है जिसकी प्रेमस हमें जा सकती। पिछले जून के महीने में उसने मध्य भारत में हलका मचा रखा है। उसने हमारे स्थानों को रोद डाला है, खजानों को लूट लिया है और हमारी मैंगजिनों को खाली कर दिया है। उससे तीनों जमा कर ली है और खो दी है; लड़ानों लड़ी है और हार खाई है; देश-देशों से तोपें छीन ली है, उन तोपों को खा दिया है; फिर और तोपे प्राप्त की है उन्हें भी खो दिया है। इसके बाद उसकी यात्राएँ बिजली की तरह प्रतिद बनी होती है। अठवां वह तौप-तौप और चाइस-चाइस पील रोजाना चला है। कभी नर्मदा के इस पार और कभी उस पार। वह कभी हमारे सेना दलों के बीच से निकल गया है, कभी पीछे से और कभी सामने से कभी पहाड़ों पर से, कभी नदियों पर से, कभी वादियों में से और कभी घाटियों में से, कभी दलदलों में से, कभी आगे और कभी पीछे से, कभी एक ओर से कभी दूसरे ओर। फिर भी वह हाथ न आया।’’

तात्त्विक और राव साहब करीब चार बजे शाम को प्रतापगढ़ की तरफ बढ़े। मेजर तात्त्विक और सेना को प्रतापगढ़ की तरफ बढ़ा ने आकर सामने से उनका मार्ग रोक लिया। तात्त्विक मेजर राक की सेना को परास राक ने आकर सामने से उनका मार्ग रोक लिया। 25 दिसंबर, सन 1858 को तात्त्विक बांसवाड़ा के जंगल कराला हुआ आगे निकला गया।
से किया। तीन इसी समय दिल्ली के राजकुल का प्रसिद्ध शाहजादा फीरोजशाह, जो अपने संग्रामों में भाग ले चुका था, अपनी सेना सहित तात्या को साहित्या के लिए आ या था। जिस तरह शाहजादे फीरोजशाह ने सेना सहित जमना को पार कर तात्या से बांके चौक की, 13 जनवरी, सन् 1859 को इन्द्रावती में फीरोजशाह, तात्या और शत्रु भंडार को भेंट हुई। सिंधिया का एक सरदार मानसिंह भी उस समय इन लोगों में आकर मिल गया।

तात्या टोपे, राव साहब और फीरोजशाह 21 जनवरी को अलवर के पास शिखर जे शुरू करे। अंग्रेज सेना उन्हें चौराही का प्रवाह कर रही थी। लेकिन अंग्रेज सैन्य आफारी यह समझ चुके थे कि तात्या टोपे को गिरफ्तार करना असंभव है। अतः उन्होंने हल की नीति अपनाई तथा तात्या टोपे के मित्र सरदार मानसिंह को लालच हित कि यदि वे तात्या को गिरफ्तार कर दे तो उन्हें माफी दे दिये जायेंगे व नरसंह रा राव उन्हें दे दिया जायेंगा।

सरदार मानसिंह लालच वर्ष अंग्रेजों की चाल में आ गया। उस समय तात्या टोपे अपने साथ पारो के जंगल में छिपे हुए थे। आधी रात के समय जब तात्या टोपे गहरी नींद में सोये हुए थे तो मानसिंह ने अंग्रेज सिपाहियों को लाकर तात्या टोपे को गिरफ्तार कर दिया।

गिरफ्तारी के बाद तीन दिन तक तात्या टोपे से पूछ-तात्त्व को जाती रही और अंग्रेजों ने न्याय का नाटक कर उन्हें फाँसी की सजा सुनाई। तात्या टोपे फाँसी की सजा सुनकर मुस्कुराने लगे। 18 अप्रेल सन् 1859 ईं को फाँसी दे दी गयी।

कार्तिकादुर्ग अजीमुल्ला खाँ

महान देश भक्त अजीमुल्ला खाँ के माता-पिता कानपुर के पटकुप में बहादुरी चली थी। वहीं बालक अजीमुल्ला का जन्म सन् 1820 ईं में एक छोटे से मकान में रहते थे। यही बालक अजीमुल्ला का जन्म नजीमादुर चली थी। अजीमुल्ला के पिता जो पेसियों से राज-मिस्त्रों थे और तत्त्व से अपनी जीवन कार्य उपार्जन करते थे। अजीमुल्ला के पिता का नाम नजीमुल्ला खाँ था और माता का नाम नजीमादुर था, जो एक धर्मपालय एवं साहसी महिला थी।
जीवन की मृत्यु अजीम की बाल्यावस्था में ही हो गई थी, फिर माँ ने ही अजीम का पालन-पोषण किया जिसके लिए उसे कई परिश्रम मेहनत मजदूरी करनी पड़ी। माँ ने मदद के लिए हिलस्टेंडन नामक अंग्रेज अफसर के घर पर घरेलू बच्चों को नौकरी कर ली। उस वक्त अजीमुल्ला की उम्र मात्र 7 वर्ष की थी। हिलस्टेंडन बालक अजीम की लगाए थे। बौद्धिक क्षमताओं से बहुत प्रभावित हुआ तथा उसे अजीम को घरेलू काम से साथ-साथ पढ़ने-लिखने का अवसर भी प्रदान किया।

बालक अजीमुल्ला 2 वर्ष के थे उनकी माँ कोई ना मृत्यु हो गयी और अजीमुल्ला अस्थायी हो गया। अब वह पूरी तरह हिलस्टेंडन के घर पर ही रहने लगा। हिलस्टेंडन के बच्चे के साथ-साथ अजीमुल्ला भी पढ़ने-लिखने लगा था तथा दूसरे-दूसरे अंग्रेज बच्चे भी बोलना लगा था। मारिस नामक अध्यापक हिलस्टेंडन के दोनों बच्चों को फ्रांसीसी भाषा की तालिम भी दिया करता था, कुशाग्र बुद्धि वाले अजीमुल्ला ने अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ फ्रांसीसी भाषा पर भी अपना अधिकार कर लिया।

हिलस्टेंडन की ही व्यवस्था अजीमुल्ला ‘फ्री स्कूल’ कानपुर में वापस हो सके, जहां किसी साधारण निर्धार बच्चे का दाखिला असंभव था, जहां केवल अंग्रेज बच्चे और रहने, जमीनदारों के बच्चे ही भरती हो पाते थे। फ्री स्कूल में तामिल पाकर अजीमुल्ला और अंग्रेज बोलने लगा गया, उन्होंने जो हैं से डिग्री भी हासिल कर ली तथा अंग्रेज अफसर हिलस्टेंडन और ‘फ्री स्कूल’ के प्रशिक्षण की सहायता से ‘फ्री स्कूल’ में ही अध्यापक भी नियुक्त हो गया।

अजीमुल्ला खाँ ने भारतीयों के साथ होने वाले अंग्रेजों के अत्याचार, दमन और शोषण को देखा तो उनका हरित अंग्रेजी शासन के प्रति धृत्योग से भर गया। उन्होंने शोषण को देखा तो उनका हरित अंग्रेजी शासन के प्रति धृत्योग से भर गया। उन्होंने शोषण को देखा तो उनका हरित अंग्रेजी शासन के प्रति धृत्योग से भर गया। उन्होंने शोषण को देखा तो उनका हरित अंग्रेजी शासन के प्रति धृत्योग से भर गया। उन्होंने शोषण को देखा तो उनका हरित अंग्रेजी शासन के प्रति धृत्योग से भर गया।
भारत की आजादी के लिए विश्व जनमत तैयार करने के लिए तथा अंग्रेज़ों के
अपराधों की पीत खोलने के लिए अजीमुल्ला ने फ्रांस, रूस, टर्की की यात्रायें की
हैं ओर वहाँ के राष्ट्रों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किये थे तथा अंग्रेज़ों
के किस्से नैतिक एवं भौतिक सहायता प्राप्त करने के घनघोर प्रयास किये थे।
अधिकतर अंग्रेज इविज़िस्टलीयों के 1857 के संग्राम की पृष्ठभूमि में अजीमुल्ला खाँ की
कूटनीतिक यात्राओं को बहुत महत्वपूर्ण निर्धारित किया है। नाना साहब पेरिया के
कूटनीतिक प्रतिनिधियों के रूप में अजीमुल्ला खाँ ने अंग्रेजों के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन
हुने का बहुत साधारण प्रयास किया था। 38
अजीमुल्ला खाँ ने नाना साहब को इस बात के लिए समझाया कि उसके समक्ष
आत्मसमान से जीने के लिए अब सरास्त्र संघर्ष के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग रोश
ही रहा है। पेरिया का दावा तुकराये जाने के पश्चात् नाना साहब पेरिया अंग्रेजों से
काफी शुद्ध हो उठे थे। अजीमुल्ला खाँ की प्रेमा साधारण सिद्ध हुई तथा नाना साहब
पेरिया अंग्रेजी राज के खिलाफ सरास्त्र संघर्ष की व्यापक तैयारी में जुट गये और
अजीमुल्ला खाँ को अन्य राजाओं एवं समाजों से सम्पर्क स्थापित कर जंगे आजादी
ने पढ़े के लिए, तैयार हो जाने के लिए कहा। 39
सरास्त्र स्वतंत्रता संग्राम की योजना बनाने बाले तथा कार्यरूप देने में सक्रिय
भूमिका निभाने बाले अजीमुल्ला खाँ का दिमाग़ जितना विलक्षण था, उतना ही उनका
जीवन भी विलक्षण था। अत्यन्त साधारण स्थिति से उठकर अजीमुल्ला खाँ प्रथम
स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे। अजीमुल्ला खाँ ने विलक्षण में नाना साहब की
स्वतंत्रता संग्राम की योजना बनाने बाले अजीमुल्ला खाँ का दिमाग़ जितना
कार्यरूप देने में सक्रिय भूमिका निभाने बाले अजीमुल्ला खाँ का दिमाग़ जितना
नाना साहब

नाना साहब का जन्म पूना के पास वेणु नामक गाँव में सन् 1824 ई. 10 को हुआ। इसके पिता का नाम माधवराव नाथरायण भट्ट था और माता का नाम गंगा बाई था। अंग्रेजों के अधीन प्रदेश में इन्हें रहना अच्छा न लगा और ये अपने परिवार के साथ सन् 1827 में बाजीराव के संस्कार के रहने के लिए बिहार चले गए।

उस समय नाना साहब की आयु केवल दोई वर्ष थी। यह बच्चा देखने में अत्यन्त सुंदर, मनमोहक था। बाजीराव पेशावा ने नाना साहब को गोद ले लिया और अपना रत्न पुत्र बनाया। तात्या दोपे, राव साहब और सदाशिव भट्ट आदि का बच्चन नाना के साथ ही व्यतीत हुआ। 28 जनवरी, सन् 1851 ई. में बाजीराव का स्वार्गवास हो गया। उस समय नाना साहब लगभग 27-28 वर्ष के युवक थे।

बाजीराव ने अपनी मृत्यु से पूर्व अंग्रेजी शासन को लिखा था कि मेरी मृत्यु के बाद नाना साहब मेरा उत्तराधिकारी घोषित किया जाये तथा 8 लाख रुपये वार्षिक पेशान जो मुझे मिलती है वह नाना को दी जाये। लेकिन बाजीराव की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने नाना साहब को पेशाव देने से मना कर दिया।

नाना साहब ने पेशाव के लिए आजीमुल्ला को इंग्लैंड भेजा लेकिन काफी प्रयत्न करके पर भी नाना को न्याय न मिला। फलस्वरूप नाना के मन में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध क्रान्ति की ज्ञाला भड़क उठी। 27 जुलाई, सन् 1857 ई. से 17 जुलाई, सन् 1857 ई. तक कानपुर अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त रहा।

इस दिन से शहर का बागडोर नाना साहब घोड़ौंपुट रेतावा ने संभाली। अदालत और राहत की समस्त प्रशासनिक कार्य नाना साहब के बैठे भाई बाबा भट्ट को सौंप गया था। हुलास सिंह को कानपुर का कोठवाल बनाया।
4 जून, 1857 की आधी रात को भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों का खजाना लूटकर इसकी सुरुआत की। नवाबगंज स्थित खजाने पर पिकेट द्वारा पर तैनात टिक्का सिंह ने विद्रोहियों को मदद की। घरेलू घर में तब बागियों को एक लाख रुपये मिले थे। लूट गई वह रकम चार रेजिमेंटों में बांट दी गई और सभी को मुक्त कर दिया गया। अनोखे के रिकार्ड जला दिए गए और शहर से उन्नाव जाने वाला नावों का पुल खत्म कर दिया गया। अंग्रेजों को विद्रोह की सुरुआत का चुही भी, इसलिए बलर हीलर तमाम साथियों और अंग्रेज महिलाओं व बच्चों को लेकर मैंजीन घाट के पास बने अस्थायी किले में जा लिया। इसके संस्करण करीब एक हजार व्याप्त जाती है। नाना साहब ने किले पर धावा बोलने के साथ ही जनरल हीलर को नोटिस भेजा। बलर हीलर जलमार्ग से महिलाओं और बच्चों को लेकर इलाहाबाद निकल जाना बाहर था, लेकिन 6 जून को सुबह नाना साहब के नेतृत्व में किले पर हमला बोल दिया गया। 19 दिनों तक किले पर नाना साहब की तोपें गोले बरसाती रहीं। इस बीच 7 जून को नाना साहब ने हिंदी और उर्दू में फरमान जारी कर नगरिकों से सहयोग मांगा।

जिस किले में अंग्रेज छिपे थे वहां एक ही कुआं था। नाना साहब ने गोलों का बरसात कर यह कुआं क्षतिप्रमुख कर दिया। आखिरकार 25 जून को शाम जनरल हीलर ने शाही का जंगा फहराकर आत्मसमर्पण का प्रस्ताव रखा। 26 जून को नाना साहब की ओर से अजीमुल्ला खाँ और ब्रिगेडियर ज्याला प्रसाद तथा अंग्रेजों की ओर से कैप्टन डूंगा और कैप्टन हीरागी के बीच समझौता हुआ। समझौते के तहत अंग्रेजों को 40 बड़ी नौकाओं पर इलाहाबाद भेजने का वायवा हुआ। तात्पर्य ये कि कम समय में 40 बड़ी नौकाओं की व्यवस्था करनी थी। कोतवाल हुलास सिंह से सहयोग लिया गया और 27 जून को सुबह सतीरों घाट पर नौकाओं का बेड़ा लगा दिया गया। किन्तु इस बीच इलाहाबाद और उसके आसपास के इलाके से हजारों मुन्यां, जिनके किसी इलाहाबाद और उसके आसपास के इलाके से हजारों मुन्यां, जिनके किसी इलाहाबाद और उसके आसपास के इलाके से हजारों मुन्यां, जिनके किसी
और वहां के देशी सिपाहियों का क्रोध भड़क रहा था। 27 जून को सबसे दिन बचे
कसिम नवाब सतीचंद घाट से चलने वाली थी। नाना उस समय अपने महल में था। घाट
पर दुश्मनों और जनता की भीड़ थी। क्रोध से उजागर सिपाहियों में से किसी एक
ने बहरे करनल ईजर में हमला किया तुरंत मार-काट शुरू हो गई।

जोही नाना को इसका समाचार मिला, उसने तुरंत आप से बताया कि—“अंग्रेज पुलिस
को देने लगे हैं। किन्तु बच्चों और सिक्कियों को हानि न पहुंचाओं।” नाना को आया
कि दुसरे ही 125 अंग्रेज सिक्कियों और बच्चे की कोई सौंप कोई पहुंचा लिया गया।
अंग्रेज पुलिस को लाइन बाधकर सतीचंद घाट पर खड़ा किया गया। उनमें से एक
ने जो शहीद पाया था, प्रार्थना की हुई कि कहलाने से पहले उन्हें इतना ही जाने कि
उने भाइयों को इंदील में से कुछ प्रार्थना पढ़कर सुना दूं। उसकी प्रार्थना स्वीकार
की गई। यह वहं इसके परामर्श कर चुका; तो हिन्दूस्तानी सिपाहियों ने सब अंग्रेजों
के सर तलब से कलम कर दिया। अंग्रेज पुलिस में से केवल चार एक करती में
बेकाबू भांग निकले। इस तरह 7 जून को कानपुर के अंदर जो करीब एक हजार
अंग्रेज थे, उनमें से 26 जून की शाम को केवल चार आत्मी अपनी पुत्री से और
125 सिक्कियों और बच्चे नाना को उदारता से जिंदा बने।

27 जून को अंग्रेजों ढ़ंग निकले पर से उतर दिया और समाप्त बहादुर शहीद जफर
की हर ढ़ंगा निकले पर लगाया गया। कानपुर पर नाना साहब के आधिपत्य की सूचना
मिलने पर इलाहाबाद से जनरल हैलवाल सेना लेकर कानपुर के पास पहुंच गया। नाना
साहब ने स्वयं सेना लेकर हैलवाल का मुकाबला किया। दोनों और की तोपें ने गोले
बसने शुरू किए। किन्तु अंदर में नाना साहब की सेना को हारकर पीछे हट जाना
ङ्गड़ा। नाना साहब ने फिर एक बार अपने सिपाहियों को प्रत्याहार करके आगे बढ़ने
का प्रहर किया। दोनों सेनाओं के मध्य घमासान खुश हुआ लेकिन हैलवाल की
विशाल रेत पर सामने नाना की सेना की पराजय हो गयी और नाना साहब बिदूर
की ओर चले गये।

17 जुलाई को फिर कानपुर पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। कानपुर में अंग्रेजी
सेना ने भयंकर आत्मा दिया। अंग्रेजी सेना के अव्यवस्थित विषय में चाल साल
ने लिखा है- "जनरल हैवलैक के सार हुए होलाक की मृत्यु का भयानक बदला चुका नहीं किया। हिंदुस्तानियों के गिरोह के गिरोह खुशी-खुशी फाँसी पर चढ़ गए। मरते समय कुछ क्रांतिकारियों ने जिस तरह हुर्र की शान्ति और व्यवहार में ओजस्विता का परीक्षा दिया, वह उन लोगों में ही हो सकता है, जो किसी ऊंचे सिद्धांत के लिए शहीद होते हैं।"

वास्तव में नाना साहब जीवन-पर्यावरण अंग्रेजों से संघर्ष करते रहे। उन्होंने नये-नये संघर्ष बनाये, बार-बार सेना का गठन किया लेकिन जब अंत में उन्होंने समझ लिया कि पास पलट गया है। तब अपने बचे हुए कुछ सैनिकों के साथ नेपाल के जंगलों में चले गये। उनका मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालकर, भारतीयों का संयुक्त राज्य स्थापित करना।

**टिकका सिंह**

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में नाना को नेपाल सौंपने में जहाँ अजीमुल्ला खान ने अहम भूमिका निभाई, वही टिकका सिंह के प्रगाढ को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। सरकारी खजाने की देख-चौंक की जिम्मेदारी संभाल रहे नाना को हिरासत में लेकर टिकका ने सरकारी खजाना लूटा और युद्ध का बिगुल पूँछ दिया। सेना का कहाँ हमेशा सिंगह टिकका सिंह में खर्च खाने में हुए कार्यस्थल कान्त के बाद से खुद को रेख नहीं सका। उसने 500 सैनिकों के साथ शासन के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उखान कर दिया। नाना पर विश्वासघात का आरोप भी न लगे और नेपाल भी उनके हाथ हो, इस सोच को अंतिम देने के लिए अजीमुल्ला के मशाल भर पर टिकका ने नवाबगढ़ पहुँचकर नाना को बंधक बनाकर खजाना लूट लिया। नाना को कल्याणपुर होते हुए बिड़ूला लाया गया और सफ चढ़ा गया कि अब नाना देशावसियों की धरोहर है और क्रांति का नेपाल स्वीकार करूँ। इससे नाना की विश्वसनीयता भी बची रही और वे क्रांतिकारियों के सरदार भी हो गए।

**मौलवी लियाकत अली**

इलाहाबाद के स्वाधीन होने के बाद दो-चार दिन कुछ अराजकता रही। उसके बाद शहर के लोग और आस-पास के कुछ जमीदारों ने मिलकर मौलवी लियाकतअली को भाषण बहादुरशाह की ओर से इलाहाबाद के इलाकों का नामक एक योग्य मुनियों को सम्राट बहादुरशाह की ओर से इलाहाबाद के इलाकों का
सुचराना नियुक्त किया। लियाकतअली एक असाधारण योग्यता का मनुष्य था। उसके बीच की पत्रिका के कारण सब लोग उसका आदर करते थे। उसने खुसरो बाग को अपने केंद्र बनाया, शहर में पूरी शांति स्थापित कर दी और दिल्ली सम्राट को बराबर अपने शहर के हालात की सूचना देता रहा। इसके बाद मौलवी लियाकतअली ने किले पर कब्जा करने का प्रयत्न किया। किले के भीतर के खिलाफ उसने स्वाधीनता के युद्ध में भाग लेने के लिए निम्नियम रूप से, किले स्वाधिनता पर उसका कोई असर नहीं हुआ। 56

अरोप्या सिंह के अनुसार-“इलाहाबाद प्रान्त में भी प्रायः सभी चरणों के लोगों ने विश्राम में हिस्सा लिया। किसान और तालुकदार, दुकानदार से साहूकार सभी इस के साथ थे। स्कूल के एक शिक्षक मौलवी लियाकत अली को स्वरूप इलाहाबाद प्रान्त का शासक नियुक्त किया गया। उन्होंने दिल्ली के सम्राट के सूबेदार को हैसियत से सात-भार संभालता और आमन-कानून की स्थापना की। किले पर कब्जा करने के लिए उन्होंने अपनी सेना संगठित करनी शुरू की।” 56

**मौलवी अहमद शाह**

मौलवी अहमदशाह फ़ैजाबाद के एक रियासतदार थे, वे सच्चे देश भक्त थे। जनता के सच्चे हितेश्वर थे, सन् 1857 ई 0 में अंग्रेजों ने देशी राजवालों, नवाबों, जमीदारों और रियासतदारों को अपेक्षा करके उनके राज्य और रियासतों को छीनना आर्थिक कर दिया। कई राजाओं और नवाबों पर अभियोग लगाकर उनके राज्य को छीन लिया। मौलवी अहमदशाह पर भी अभियोग लगाकर उनकी रियासत अंग्रेजों ने छीन ली। 57

इसी समय अंग्रेजों ने लखनऊ के नवाब वजिदअली शाह को गद्दी से उतारकर विशेष भेज दिया। इससे अवध की जनता में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति की लहर दौड़ गयी। मौलवी अहमद शाह ने विचार किया कि जब तक अंग्रेज भारत में रहते तब तक भारतीयों पर दमन-अत्याचार होता रहेगा। आत: उन्होंने अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने की प्रतिज्ञा की। 58

मौलवी अहमदशाह के बिश्व में अंग्रेज लेखक होम्स ने लिखा है कि-“मौलवी
अल्मसलाह उस भारत में अंग्रेजों का सबसे जबरदस्त राशि था।” मौलवी अहमद शहा के योग्यता एवं सूची-बूश के बारे में इतिहासकार मालेसन ने लिखा है—“मौलवी एक बड़ा अदुपुर आदर्श था। सेनापति की हैसियत से उसकी योग्यता के अनेक सबूत विस्तृत में मिले। कोई भी और मनुष्य अधिमान के साथ यह न कह सकता था। क्या मैं दो बार सर कॉलिन कैम्पबेल को मैदान में परास्त किया। फैजाबाद के मौलवी अहमद को इस तरह मृत्यु हुई। यदि किसी ऐसे मनुष्य को, जिसकी जनभूमि की समस्तता का अन्याय द्वारा अपहरण कर लिया गया हो और जो फिर से स्वाधीनता का काम करने के लिए तजड़ीज़ करे और युद्ध करे, देशाधिकार कहा जा सकता है, तो इसमें अनुपात भी सटेक नहीं हो सकता कि मौलवी अहमदशाह सच्चा देशाधिकार था। उसने किसी की गुत्थ हत्या करने अपनी तलवार को फ़लकित न फ़िया था। निश्चित और निहल्ये व्यक्ति की हत्या को उसने कभी गनारा तक न फिया था। उसने गलवार आने के साथ और दंडकर खुले मैदान में उन विदेशियों के साथ युद्ध किया, जिन्हें उसका देश छीन लिया था। हर देश के बीच और सच्चे लोगों को मौलवी अहमदशाह को आदर के साथ स्मरण करना चाहिए।”

11 मार्च तक पंजाब और पूर्व से चढ़ाई करने वाली सेनाओं लाखनऊ में आ गई। लेकिन इस बीच लाखनऊ में क्या हो रहा था? सर कॉलिन कैम्पबेल को दोआबा में फंसा देख मौलवी अहमद शाह लाखनऊ के आलमबाग में पड़ा। धारे अंग्रेजों को ख़त्म कर देना चाहते थे। लाखनऊ में बहुत-सी विदेशी पलटने जमा हो गई थी और बहुत से तालुकदार अपनी-अपनी सेना लेकर उसकी रक्षा के लिए आ गई थी और बहुत से तालुकदार अपनी-अपनी सेना लेकर उसकी रक्षा के लिए आ गई थी। अंततः दरबार के अधिकांश अधिकरी अर्थात् शहीद थे और सारे देश के लाभ को गये थे। नितु दरबार के अधिकांश अधिकारी अर्थात् शहीद थे और सारे देश के लाभ को गये थे। इससे सारे शहर में अच्छे स्थान दिख पड़ती थी। मौलवी अहमद शाह के अनुशासन और व्यवस्था काम करने की चेष्टा थी। उनके बढ़ी प्रभाव से कुछ नाकाबल दरबारियों जिन्होंने लगे और उन्हें गिरफ्तार कर जेल में बढ़ी प्रभाव से कुछ नाकाबल दरबारियों जिन्होंने लगे और उन्हें गिरफ्तार कर जेल में हजार हजार दिया। लेकिन दृष्टिकोण से आने वाली पलटनों और लाखनऊ की जनता ने हजार हजार दिया।

15 मार्च को लाखनऊ पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। लेकिन बेगम हजार
भरत, नाम साहब, दिल्ली में शाहजादा फैरोज, मौलवी अहमद शाह आदि अंग्रेजों
के धरे को तोड़कर निकाल गये और बरेली की तरफ चले गये।

मौलवी अहमद शाह जल्दी ही लखनऊ वापस आ गये। खास लखनऊ शहर के
अन्य अपने मुहत्त्व धरा साथियों और दो लोगों के साथ शहादतगंज के एक मकान में
अपने मोर्चा लगाया। इस मोर्चे से वे अंग्रेजों के खिलाफ 21 मार्च तक लड़ते रहे।
लखनऊ के नेतृत्व में अंग्रेज और सिख सैनिक उनसे लड़ने बेजूं गये। कितने ही दुश्मनों
को हटाने कर मौलवी ने अपना मोर्चा हटाया। अंग्रेजों की विजय देखकर मौलवी
अलमशाह ने पोखरे के राजा को एक पत्र लिखा कि यदि वे अपनी सेनाओं दे तो
अंग्रेजों को परास्त किया जा सकता है। राजा जगनाथ ने मौलवी को आश्वासन दिया
कि यदि वे हमारे महल में आये तो उन्हें सैनिक सहायता प्रदान की जायेगी। लेकिन
हैरानी और चिंता अंग्रेजों से मिला हुआ था।

5 जून, सन् 1858 ई० को मौलवी अपने साथियों के साथ पोखरा नरेश जगनाथ
के महल के मुख्य द्वार पर पहुंचे। राजा के महल के दरवाजे बंद थे। उसकी दीवारी
को राजा के सैनिकों ने धोराकर को हुई थी। राजा और उसका भाई महल की प्राचीर
पर अपने हथियारकर्न देखकर मौलवी ने समझ लिया कि राजा को
भयभीत किये बिना न तो बाहर हो नबंधी और न ही कोई साथक नतीजा निकल पाएगा
और उसका पोखरा आगा बेकार हो जायेगा। हाथी के लिए हुए मौलवी ने अपने
समस्त को महावात की आदेश दिया कि हाथी से फाटक तुड़वा दे, हाथी ने अपने मस्तक की
उसके मारकर फाटक को तोड़ दिया। राजा के भाई बलदेव सिंह ने राजा के इशारे
पर गोली मारकर मौलवी को हत्या कर दी।

इतना ही नहीं राजा तथा उसके भाई ने वहीं तुरंत मूर्त मौलवी के सिर को काटकर
इसका ही नहीं राजा तथा उसके भाई ने वहीं तुरंत मूर्त मौलवी के सिर को काटकर
चढ़ दिया और राजा जगनाथ सिंह मौलवी के सिर को स्माल में
ँढ़ लेकर धारा पर सवार होकर शहीदपुर में अंग्रेज मिस्ट्रेस के पास पहुंचा जो उस
समय अपने कुछ मित्रों के साथ भोजन कर रहा था। राजा ने स्माल हटकर मौलवी
के सिर उससे दिखाया तो मिस्ट्रेस बड़ा प्रसन्न हुआ। अंग्रेजों ने राजा को पुरस्कार
के रूप में जागीर तथा पचास हजार रुपये दिये।
इस प्रकार राजा जगनाथ के विश्वसनीयता के कारण मौलवी अहमदशाह की मृत्यु हुई। ऑग्जें ने अगले दिन मौलवी अहमदशाह के कटे हुए सिर को शाहजहाँपुर की कौशली के सामने दांग दिया।

सेनापति बख्त खाँ।

भारत के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम सन् 1857 ई. में बख्त खाँ ने अंग्रेजी सेना को बड़ी टक्कर दी तथा भयंकर क्षति पहुँचायी। 2 जुलाई सन् 1857 ई. में बख्त खाँ ने सेना के साथ दिल्ली में प्रवेश किया। सेना के साथ दिल्ली पहुँचने पर दिल्ली वालों तथा सम्राट बहादुर शाह जफर ने बख्त खाँ का भव्य स्वागत किया।

इस बीच दिल्ली में स्थान स्थान की फौजों के आने के कारण प्रबलता की कुछ विस्तार दिखाई देने लगी थी। सेनापति मिरजा मुगल में सुरक्षाना स्थापित करने की विश्वसनीय दिखाई न देती थी। अनेक शिकायतें सम्राट के कानों तक पहुँची। बूढ़े सम्राट ने अपने बेटे मिरजा मुगल को हटाकर उसकी जगह बख्त खाँ को दिल्ली की सारी सेनाओं का प्रधान सेनापति और दिल्ली का 'गवर्नर' नियुक्त किया। बख्त खाँ अत्यंत गौंध और चौर था। उसने सम्राट से कहा कि यदि इसके बाद कोई शाहजादा भी शहर के अंदर प्रवेश में वाधा दालेगा, तो सज़ा के साथ किसी तरह का अन्याय करेगा, तो मैं उसके नाक-कान कटवा दालूंगा। सम्राट ने स्वीकार कर लिया।

बख्त खाँ के साथ करीब चौदह हज़ार पैदल, दो तीन सवार पलटन और अनेक हज़ार सेना थी। उन्होंने सेना को छोड़ महीनों की तनावहरू फेंक दिया। इसके अंतरिक्ष में उसने आप लाख रुपये नकद लाकर सम्राट को भेंट की। बख्त खाँ ने शहर में सुरक्षाना स्थापित किया और आतंक न दिया कि कोई भी मतदाता बिना हथियार के न रहे। उनके पास हथियार न थे, उन्हें मुफ्त हथियार दिए गए। इसके बाद यदि कोई सिपाही बिना पूरी कोभेट दिया किसी से कोई चीज लेता था, तो सिपाही का एक हथियार काट दिया जाता था। उसी दिन रात को 8 बजे महबूब के अन्तर सम्राट हाथ काट दिया जाता था। उसी दिन रात को 8 बजे महबूब के अन्तर सम्राट हाथ काट दिया जाता था।

जुलाई को एक आम ख़रेद हुई, जिसमें करीब बीस हज़ार सेना मौजूद थी। 3 जुलाई को एक आम परेड हुई, जिसमें करीब बीस हज़ार सेना मौजूद थी।

"सेनापति बख्त खाँ ने 4 जुलाई को अंग्रेजी सेना पर आक्रमण किया और 5 जुलाई
ब्रॉडर्ड मारा गया।67 उसका स्थान जनरल रीड ने लिया और 14 जुलाई को अंग्रेजी
की हार गयी और जनरल रीड भाग गया।68
बख्त खाँ ने अंग्रेजों को अनेक बार पराजित किया। लेकिन गद्दरी से बहादुर
शाह जफर को हडसन के हाथों गिरफ्तार करवाया। बख्त खाँ के बार-बार समझाने
पर बहादुर शाह ने उसकी बात न मानी। बादशाह को गिरफ्तार न कर
फता। अंततः समय तक बख्त खाँ ने हार न मानी।

राजा बेनी माधव
राजा बेनीधोर सिंह रामनारायण सिंह के पुत्र थे जो शंकरपुर के तालुक्दार
शिवप्रसाद सिंह के सम्बन्धी थे। तालुक्दार शिवप्रसाद सिंह निस्तान थे अतः उन्होंने
यह बेनीधोर को अपना दत्तक पुत्र बनाया। इसके अलावा शंकरपुर, भीमखा, जगतपुर
tथा पुकारों के चार जिले थे जिसमें शंकरपुर का जिला अत्यधिक विशाल एवं
महत्वपूर्ण था। बेनीधोर ने सन 1857 की क्रान्ति के समय काफी वृद्ध थे जिन्होंने
प्रणयाली थे। बेनीधोर के विषय में रसेल लिखता है कि “बेनीधोर ने बैलवारा
जिले तथा जाति का दीर्घकाल तक नेतृत्व किया है। भूतकाल में बंगाल की सेना के
लिए लगभग 40,000 उत्तम सिपाही हमें इस जिले से प्राप्त होते थे।69

1857 की क्रान्ति के संघर्ष में वे अपने भाई गजराज सिंह के साथ मैदान में कुछ
पहले तथा लखनऊ के योद्धों के साथ मिलकर बेलिगड़ के युद्ध में हुद्धरा के साथ
बढ़े। ये ग्राउंड ट्रक रोड पर भी छा रहे मारा करते थे। होम्स के अनुसार 25 मई 1858
को होपस्टांट ने बेनीधोर को सेना पर कानपुर की सड़क के ऊपर आक्रमण किया
किन्तु ये वहाँ से गायब हो चुके थे। इन्होंने गुरुल्ला सुद्र, जिसके लिए वे बाद में
प्रसिद्ध हुए, प्रारम्भ से ही छेड़ रखा था।70

राजा बेनीमाधव के स्थान पर तीन सेनाओं ने तीन तरफ से चढ़ाई की। अंग्रेजों
का बल उस समय बेहद बढ़ा हुआ था और बेनीमाधव के पास सेना और आर्मी,
को बल उस समय बेहद बढ़ा हुआ था और बेनीमाधव के पास सेना और समस्या.
पा ने की थी तथा फिर भी बेनीमाधव ने विदेशयों की अधिकता स्वीकार न की।
देशों की कमी थी। फिर भी बेनीमाधव ने विदेशियों की अधिकता स्वीकार न की।
कालिन बैल ने बेनीमाधव के पास सेना भेजा कि अब
माण्डर-इन-चोफ सर कालिन बैल ने बेनीमाधव के पास सेना भेजा कि अब
आपको विजय की आशा करना व्याप्त है। यदि आप वृत्ति रक्षा नहीं करते, तो
आपको विजय की आशा करना व्याप्त है।
बेगम हजरतमहल

लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह को अंग्रेजों ने शासन से पदन्मूत करके इसने मे नजरबन्द कर दिया और अवध को अपने अधिकार में लेकर लारेंस को अपना कमिशनर नियुक्त किया। अंग्रेज कमिशनर लारेंस ने अवध में भयंकर अलर्ट किये। बेगमों को बेकाबू किया, शाही खजाना लूट लिया। नवाब की सभी धन के स्वभाव कर गयी। लेकिन बेगम हजरतमहल अपने पुत्र विरजिस कठ के साथ लखनऊ में ही रही।

मई 1857 में जब दिल्ली में क्रान्ति हुई और दिल्ली अंग्रेजों से मुक्त हो गयी।

तब लखनऊ से अंग्रेजों का मार भगाने के लिए बेगम हजरतमहल ने संघर्ष आरंभ कर दिया। बेगम हजरतमहल ने 4 जनवरी सन 1858 को अपने पुत्र का विरजिस कठ के संख्यांकन पर बैठते ही बेगम ने विरजिस कठ को और से एक घोषणा जारी की जिसमें कहा गया था कि अवध के पुर्तगाली राज्य से अप्सरा और काफिर फिरिगियों को निकालकर बाहर किया जायेगा।

बेगम हजरतमहल की घोषणा का बड़ा प्रभाव पड़ा तथा जनता व राजा, नवाब उनके साथ हो गये और अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में कूद पड़े।

लखनऊ शहर के अन्दर नवम्बर सन 57 से मार्च सन 58 तक स्वाधीनता का हुआ बाबर जारी था। अवध की अधिकांश प्रजा और वहाँ के लगभग सब राजा, भाईर और ताल्लुकदार सभी उत्साह के साथ इस युद्ध में शामिल थे। लादर कैनिंग ने यह बेस्ट उंटरल के नाम एक पत्र में लिखा कि जो राजा और ताल्लुकदार, अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में भग ले रहे थे, उनमें से कम से कम अनेक ऐसे थे, जिन्हें स्वभाव और राज के बजाय हानि के लाभ हुआ था, फिर भी लोग अंग्रेजी राज के इस
समस्त किरत शान्ति थे और जनाब विरजीस कदर और बेगम हजरतमहल के लिए अपने स्वभाव की आहुति देने को उद्यत थे।

इतिहास लेखक होम्स लिखता है–

"अंग्रेज राज ओर छोटे-छोटे सरदार ऐसे थे, जो सदा अंग्रेज सरकार के बच्चों ब्राह्मणी में अपने आश्रक करने के लिए चिन्तित रहते थे। उन्हें स्वयं कोई विशेष हानि न पड़ती थी, किंतु अंग्रेज सरकार का अस्तित्व ही उन्हें सदा याद दिलाता रहता था कि हम एक पराजित कौम के आदमी हैं भारत की लाखों जनता के दिलों में विदेशी सरकार के लिए कोई सच्ची राजभक्ति न थी। निपटने के दिनों में भारतवासियों के बावहार का ठीक-ठीक अन्तर्जाति करने के लिए यह राज रखना आवश्यक है कि इन लोगों को हमारी जैसी एक विदेशी सरकार के लिए उस तरह की राजभक्ति अनुभव करा, जो कि केवल देवभक्ति के साथ-साथ ही चल सकती है, मानव प्रकृति के प्रवीण होता। उनमें एक भी मनुष्य ऐसा न था, जिसे यदि एक बार यह विरासत हो जाता कि अंग्रेजों राज को उखाड़ पेंका जा सकता है, तो वह हमारे विरुद्ध न हो जाता।"

30 मई, सन 1857 ई को लखनऊ में बेगम का अधिकार हो गया केवल रजीहेंसी को छोड़कर। सभी अंग्रेजों को मार दिया गया। रेजीहेंसी पर आक्रमण कर लोरेस को भी मार दिया। चास्त ने लखनऊ में बेगम हजरतमहल ने स्वयं क्रांति का नेतृत्व किया।

आजीजन बाई

क्रांतिकारियों की सहायता के लिए आजीजन बाई ने दिन-रात गोला-बाहर, हैदराबाद, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचने तथा अंग्रेज सैनिक अधिकारियों की गुल जानकारी भारतीय क्रांतिकारियों को पहुँचायी।

कानपुर की हिन्दू और मुसलमान स्त्रियां उस समय अपने घरों से निकलकर गोला-बाहर इधर से उधर ले जाने, सैनिकों को भोजन पहुंचाने और ठीक अंग्रेजी किले की टीवार के नीचे तोपालियों को मदद देने का काम कर रही थी।

आजीजन बाई के देशभक्तिपूर्ण काय्य एवं क्रांतिकारियों की सहायता करने के बारे
अवंती बाई

जुलाई 1857 में रामगढ़ राज्य से, जो वर्तमान मंडला जिले का गढ़ था, श्रीमती के विवाह के चार दोषियों से राजा लक्ष्मण सिंह के उत्तराधिकारी विक्रमजीत सिंह ने हुआ, जो रामगढ़ के राजा थे। अवंती बाई ने बिछी मनकेठौंडी जागीर के राज गुलजार सिंह ने। अवंती बाई के पिता ने कुछ ही मिनटों में राज्य का राज कर लिया और अपने राज्य का अंतर्गत अपने हाथ में लिया। राजनी और उसके पुत्रों के लिए सलामा पेंशन बांध दी। राजनी ने इसका बड़ा विरोध किया।

रामगढ़ की रानी अवंती बाई के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की सेना ने सबसे पहले मंडला राज्य को अंग्रेजों से मुक्त कराने का संकल्प लिया। अंग्रेज संग्रामता बार्टन सेना लेकर मुक्तिलाभ के लिए आ गई। बार्टन संग्राम हुआ जिसमें अंग्रेजी सेना के पावं उखड़ गए। रानी पर बार्टन वार करने ही चाही था कि रानी ने उस पर तलवार से ऐसा भरपूर चार किया कि उसके शोध के दो हज़ार दूर रहे। बार्टन बार्टन घबरा गई। वह अपनी तलवार भोजक कराने के पर पर गिरकर स्थान मांगने लगा।

लेकिन कुछ समय उपरान्त एक विशाल अंग्रेजी सेना ने रानी की सेना पर अप्रवेश किया। अंग्रेजी की विशाल सेना ने आगे अवंती बाई का परस्पर बनाम झगड़ा। उन्होंने अवंती बाई को वजह से जनता में जाकर राय तैयार। रानी से शिवाजी की तरह अंग्रेजों पर विकार गढ़ के जंगलों में जा जाकर शारण ली। रानी से उसकी मूर्ति को भेंट होने लगी। भरतक युद्ध हुआ। गुलजार चार करने रही। वार्टन ने वह भी रानी का पीछा किया। उन्होंने मूर्ति को भेंट लेना और अपनी रानी अंग्रेजों को बंदी बनना नहीं चाहती थी। उन्होंने बिछा को बेहतर समझ और अपनी रानी अंग्रेजों की बंदी बनना नहीं चाहती थी। उन्होंने अंग्रेजों से कहा, रानी अपने सीने के पार कर ली और हस्त-हस्त से अपनी एक अंग्रेजों से कहा लेकर अपने सीने के पार कर ली और हस्त-हस्त से अपनी
सद्दे 1857 ई. के स्वतन्त्रता-संग्राम में हजारों क्रांतिकारी एवं देशभक्त शाहीद हो गए। कुषारी मेना की अंग्रेजों ने हत्या कर दी लेकिन मेना ने अपना गुप्त रहस्य अंग्रेजों से न बताया। नीरंगना झलकारी बाई युद्ध में लड़ते-लड़ते शाहीद हो गयी। शाहीद मंगल पाण्डे ने तीन अंग्रेजों को मारकर शहादत प्राप्त की। क्रांतिकारी बौर अली को चूर्ण ने फौंसी पर लटकाया। लेकिन पीर अली ने अपने क्रांतिकारी साथियों का नाम न बताया। राम तुलाराम ने जीवन भर अंग्रेजों से संघर्ष किया। अमर सिंह ने बीर दुर्गा सिंह के स्मृति वाद अंग्रेजों से लोहा लिया और जीते जी हार न मानी। निशं सिंह, जोधर सिंह तिंकका सिंह ने बड़ी बौरताना के साथ अंग्रेज सेना से कब्ज़ा ली और अपने जीवन का होम कर दिया।
संदर्भ

1. व्यक्ति हरदय
   व्यक्ति हरदय: स्वाधीनता-संग्राम के क्रांतिकारी सेना, सामाजिक प्रकाशन, 3543, जटवाड़ा दरियागंज नई दिल्ली-110002, सन् 1993 ई, पृष्ठ-30-31.

2. इ.कृष्ण जैन
   इ.कृष्ण जैन: झौंसी की रानी लक्ष्मी बाई, मंगला प्रकाशन, 2011 गाली नं 04 कैलाश नगर दिल्ली-110031, पृष्ठ-7-8.

3. वही-वही-वही, पृष्ठ-19

4. व्यक्ति हरदय
   व्यक्ति हरदय: स्वाधीनता-संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी, सामाजिक प्रकाशन-3543 जटवाड़ा दरियागंज नई दिल्ली-110002, सन् 1993 ई, पृष्ठ-31.

5. रविचन्द्र गुप्ता
   रविचन्द्र गुप्ता: राष्ट्र आज इनकी जय बोल, अनिल प्रकाशन 2619-20, न्यू मार्किट नई सड़क दिल्ली-110006, सन् 1998 ई, पृष्ठ-27

6. प्रकाश विभाग
   प्रकाश विभाग: भारत के गौरव, भाग-3, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पटियाला हाउस-नई दिल्ली-110001, सन् 2000 ई, पृष्ठ-84

7. वही-वही-वही, पृष्ठ-19

8. रविचन्द्र गुप्ता
   रविचन्द्र गुप्ता: राष्ट्र आज इनकी जय बोल, अनिल प्रकाशन 2619-20, न्यू मार्किट नई सड़क दिल्ली-110006, सन् 1998 ई, पृष्ठ-28

9. सुनदर लाल
   सुनदर लाल: भारत में अंग्रेजी राज, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार पटियाला हाउस-नई दिल्ली-11001, सन् 1982 ई, पृष्ठ-858

10. वही-वही-वही, पृष्ठ-857

11. वही-वही-वही, पृष्ठ-857

12. व्यक्ति हरदय
   व्यक्ति हरदय: स्वाधीनता-संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी, सामाजिक प्रकाशन 3543 जटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली-110002, सन् 1993 ई, पृष्ठ-33
वही—वही—वही, पृष्ठ—

14. श्रीकृष्ण सरल
: क्रांतिकारी कोश, प्रथम खण्ड, प्रभात प्रकाशन दिल्ली 110002, सन् 2004 ई0, पृष्ठ-254

15. प्रकाशन विभाग
: भारत के गौरव भाग-3 सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार, पति वाला हाउस नई दिल्ली-110001, सन् 2000 ई0, पृष्ठ-77

16. व्यक्ति हदय
: स्वाधीनता-संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी, सामयिक प्रकाशन 3543 जटवाड़ा दरियागंज नई दिल्ली 110002, सन् 1993 ई0, पृष्ठ-23

17. गंदीर नारायण
: भारतीय स्वतन्त्रता का इतिहास, प्रवालक पुस्तक चक्कर परियोजना, हिंदी प्रचारक संस्थान, पिशाचमोचन, वाराणसी 221001 सन् 1889 ई0, पृष्ठ-51

18. व्यक्ति हदय
: स्वाधीनता-संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी, सामयिक प्रकाशन 3543 जटवाड़ा दरियागंज नई दिल्ली-110002, सन् 1993 ई0, पृष्ठ-24

19. श्री कृष्ण सरल
: क्रांतिकारी कोश, प्रभात प्रकाशन दिल्ली-110002 सन् 2004 ई0, पृष्ठ-139

20. वही—वही—वही, पृष्ठ-140

21. सुंदर लाल
: भारत में अंग्रेज़ी राज, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार, पति वाला हाउस, नई दिल्ली-110001, सन् 1982 ई0, पृष्ठ-916

22. वही—वही—वही, पृष्ठ-956

23. व्यक्ति हदय
: स्वाधीनता-संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी, सामयिक प्रकाशन 3543 जटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली-110002, सन् 1993 ई0, पृष्ठ-25


25. The Times: 17 January, 1859
26. प्रकाशन विभाग

: भारत के गौरव भाग 3, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस-नई दिल्ली-110001, सन् 2000 ईं, पृष्ठ-79

27. रविचन्द्र गुप्ता

: इहें भूला न देना, मानसी गंगा प्रकाशन, 32 शिवालिक अपार्टमेंट्स, डी-ब्लॉक सरस्वती विहार के सामने दिल्ली-110034, सन्-2000 ईं, पृष्ठ-44

28. हिन्दुस्तान

: सोमवार 18 दिसम्बर सन् 2006 ईं, पृष्ठ-11

29. जगदीश जयेश

: कलम आज उनकी जय बोल, प्रचारक प्रशस्तावली परियोजना हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन, पिशाचमोहर-वाराणसी, सन् 1997 ईं, पृष्ठ-36

30. रुप सिंह चंदेल

: क्रान्तिदूत अजीमुल्ला ख़ाँ, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, पटियाला हाउस-नई दिल्ली-110001, सन् 1992 ईं, पृष्ठ-2

31. वही-वही-वही-, पृष्ठ-3

32. स्मृतिका

: साझी शहादत के कुछ फूल 1857, नेहरू युवा केन्द्र संगठन, युवा कार्यक्रम एवं खेल मन्त्रालय भारत सरकार, इंदिरा गाँधी स्टेडियम नई दिल्ली-110002, सन् 2007 ईं, पृष्ठ-183

33. रविचन्द्र गुप्ता

: राष्ट्र आज इसकी जय बोल, अनिल प्रकाश, 2619-20 न्यू मार्किट नई सड़क दिल्ली-110006, सन् 1998 ईं, पृष्ठ-43

34. हिन्दुस्तान

: सोमवार 13 नवम्बर सन् 2006 ईं, पृष्ठ-11

35. श्रीकृष्ण सरला

: क्रान्तिकारी कोरा, प्रभात प्रकाश, दिल्ली-110002, सन् 2004 ईं, पृष्ठ-35

36. रविचन्द्र गुप्ता

: राष्ट्र आज इसकी जय बोल, अनिल प्रकाशन 2619-20 न्यू मार्किट, नई सड़क दिल्ली-110006 सन् 1998 ईं, पृष्ठ-44

37. वही-वही-वही-
38. अथिरत हर्दय
: स्वाधीनता-संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी, सामाजिक प्रकाशन, जटवाड़ा-दरियागंज नई दिल्ली-110002, सन् 1993 ई0, पृष्ठ-27

39. रूप सिंह चंदेल
: क्रांति दूत अजीमुल्ल खाँ, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पतियाला हाउस, नई दिल्ली-110001, सन् 1992 ई0, पृष्ठ-34-35

40. श्री कृष्ण सरल
: क्रांतिकारी कोश, प्रभात प्रकाश दिल्ली-110002, सन् 2004 ई0, पृष्ठ-36-37

41. प्रकाशन विभाग
: भारत के गौरव, भाग 3, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पतियाला हाउस नई दिल्ली-110001, सन् 2000 ई0, पृष्ठ-89

42. बही-बही-बही, पृष्ठ-90

43. अथिरत हर्दय
: स्वाधीनता-संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी, सामाजिक प्रकाशन 3543 जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, सन् 1993 ई0, पृष्ठ-19

44. बही-बही-बही-

45. रविचन्द गुप्ता
: राष्ट्र आज इनकी जय भी, अनिल प्रकाशन, 2619-20, न्यू मार्किंग, नई सड़क दिल्ली-110006, सन् 1998 ई0, पृष्ठ-33

46. बही-बही-बही, पृष्ठ-34

47. हिन्दुस्तान

48. बही-बही-बही-

49. बही-बही-बही-

50. हिन्दुस्तान

Forrest's State Papers, also Kaye and Malleson's
Indian Mutiny, vol. ii, page 258

51. सोमवार, 13 नवम्बर, सन् 2006 ई0, पृष्ठ-11

52. हिन्दुस्तान

53. सोमवार, 13 नवम्बर, सन् 2006 ई0, पृष्ठ-11
53. प्रकाशन विभाग
: भारत के गौरव, भाग-3, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, पत्रियाला हाउस, नई दिल्ली-110001, सन् 2000 ई, पुस्त-92

54. हिन्दुस्तान
: सोमवार, 13 नवम्बर, सन् 2006 ई, पुस्त-11

55. अयोध्या सिंह
: भारत का मुक्ति संग्राम, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली-110002, सन् 2002 ई, पुस्त-325

56. वही-वही-वही-

57. व्याख्यात हृदय
: स्वाधीनता-संग्राम के कांग्रेसी सेनानी, सामान्य प्रकाशन, 3543 जड़वाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 सन् 1993 ई, पुस्त-31

58. वही-वही-वही-

59. स्मारका
: साझी शहादत के कुछ फूल 1857, नेहरू युवा केंद्र संगठन, सुवा कार्यक्रम एवं खेल मन्त्रालय भारत सरकार इंदिरा गाँधी स्टेडियम, नई दिल्ली-110003, सन् 2007, पुस्त-165

60. वही-वही-वही-

61. वही-वही-पुस्त-166

62. व्याख्यात हृदय
: स्वाधीनता-संग्राम के कांग्रेसी सेनानी, सामान्य प्रकाशन, 3543 जड़वाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 सन् 1993 ई, पुस्त-34

63. कादम्बिनी
: अगस्त 2006 ई, 1957 ई के अल्पविश्लेष सेनानी, पुस्त-81

64. जगदीश ‘जगोस’
: कलम आज उनकी जय बोला, प्रचारक प्रथावली परियोजना, हिंदी प्रचारक प्रबंधक, सी0 21/30, विशाखमोहन, वाराणसी-221010, सन् 1997 ई, पुस्त-22

65. वही-वही-वही-

66. सुदर लाल
: भारत में अंग्रेजी राज, प्रकाशन विभाग-सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, पत्रियाला हाउस-नई दिल्ली-110001 सन् 1982 ई, पुस्त-879
67. रविकन्द्र गुप्त

68. रविकन्द्र गुप्त

69. समारक

70.

71. सुन्दर लाल

72. दुर्गा प्रसाद गुप्त

73.

74. गदाधर नारायण

75.

76. हिन्दुस्तान

77.

78. सुन्दर लाल

79. आजकल

80.

वही-वही-वही-

: इस्हे भुला न देना, मानसी गंगा प्रकाशन, 32, शिवालिक अपार्टमेंट्स, डी0 ब्लॉक सरस्वती विहार के सामने, दिल्ली-34, सन् 2000 ई0, पृष्ठ-38

वही-वही-वही-

: साझे शाहदत के कुछ पूल 1857, नेहरू युवा केन्द्र संगठन, नेहरू कार्यक्रम एवं खेल मन्त्रालय, भारत सरकार, इंदिरा गांधी स्टेडियम नई दिल्ली-110002 सन् 2007 ई0 , पृष्ठ-187

वही-वही-वही-

: भारत में अंग्रेजी राज, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार, पत्रियाला हाउस, नई दिल्ली-110001, सन् 1982 ई0, पृष्ठ-952

वही-वही-वही-पृष्ठ-24-25

: भारत का स्वतंत्रता संग्राम पीठाम्बर पब्लिशिंग कम्पनी 888, ईस्ट पार्क रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-110005, सन् 1998 ई0, पृष्ठ-24

वही-वही-वही-वही-

: भारतीय स्वतंत्रता आदर्शों का इतिहास, प्रचारक प्रेमवली परियोजना, हिन्दी प्रचारक संस्थान, प्रशासनिक वाराणसी, सन् 1989 ई0, पृष्ठ-41

वही-वही-वही-

: सोमवार 13 नवम्बर सन् 2006 ई0, पृष्ठ-11

वही-वही-वही-

: भारत में अंग्रेजी राज, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, पत्रियाला हाउस नई दिल्ली-110001, सन् 1982 ई0, पृष्ठ-853

: मई सन् 2007 ई0, पृष्ठ-81

वही-वही-वही-